बुद्धवर्ष २५५१, श्रावण पूर्णिमा, २८ अगस्त, २००७ वर्ष ३७ अंक २

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

पूजारहे पूजयतो, बुद्धे यदि व सावके।
पपञ्चसमतिक्कन्ते, तिण्णसोक परिद्दवे॥
ते तादिसे पूजयतो, निब्बुते अकुतोभये।
न सक्का पुञ्ञं सङ्खातुं, इमेत्तमपि केनचि॥

धम्मपद–१९५-१९६, बुद्धवग्गो

पूजा के योग्य बुद्धों अथवा उनके श्रावकों- जो (भव-) प्रपंच का अतिक्रमण कर चुके हैं और शोक तथा भय को पार कर गये हैं -

निर्वाणप्राप्त, निर्भय हुए - ऐसे लोगों की पूजा के पुण्य का परिमाण इतना होगा, यह नहीं कहा जा सकता।

तपस्सु और भल्लिक

बहुत प्राचीन समय से दक्षिणी ब्रह्मदेश (म्यंमा) के ऐयावडी (इरावदी), सिट्टांग (चित्तांक) और ताल्विन (सालवन) नदियों के मुहानों पर व्यापार हेतु अनेक भारतीय बस गये थे। विशेष रूप से इरावदी के मुहाने पर अधिक लोग जा बसे थे। इनमें से कुछ उत्कल प्रदेश के थे। इस कारण वे इस प्रदेश को उक्कल (उत्कल) कहने लगे। इस प्रदेश का राजा भी उक्कलापा (उत्कलपति) कहलाता था। वहां से भारत और म्यंमा का विपुल व्यापार होता था। उन व्यापारियों में से दो थे – तपस्सु और भल्लिक। ये दोनों भाई थे, तपस्सु बड़ा और भल्लिक छोटा।

ये दोनों ५०० बैलगाड़ियों पर बर्मा की उपज का माल भारत बेचने लाये थे। इनका यह कारवां उरुवेला के वनप्रदेश में से गुजर रहा था। वहां इन्हें बोधिमंड के राजायतन वृक्ष के तले भगवान सम्यक संबुद्ध के दर्शन हुए। संबोधि प्राप्त करने के बाद भगवान बोधिमंड के ही आस-पास एक-एक स्थान पर एक-एक सप्ताह तक बैठे हुए अमृत अर्थात विमुक्ति-सुख का आस्वादन करने में निरत थे। यह उनका आठवां सप्ताह था। बुद्धत्व प्राप्त होने के पूर्व उन्होंने सुजाता की खीर का आहार लिया था। बुद्धत्व प्राप्ति के बाद इन सात सप्ताहों तक ध्यानरस ही उनका आहार रहा। अब म्यंमा के इन दो बंधुओं ने म्यंमा के चावलों से बने मधु-मोदक भगवान को अर्पित किये। बुद्धत्व प्राप्ति के बाद भगवान का यह पहला भोजन था। म्यंमा देश धन्य हुआ। ऐसी मान्यता है कि इस पुण्यशाली भोजनदान के कारण ही म्यंमा में कभी कोई भूख से पीड़ित होकर नहीं मरता।

इन दोनों व्यापारियों ने भगवान को सादर नमन किया। भगवान ने उन्हें पंचशील का उपदेश दिया। उन्होंने बुद्ध तथा धर्म इन दो रत्नों की शरण ली। तीन रत्नों की शरण नहीं ले सके, क्योंकि तब तक तीसरे संघ रत्न का गठन ही नहीं हुआ था। इस प्रकार ये भगवान के प्रथम गृहस्थ शिष्य हुए। इस कारण भी म्यंमा (बर्मा) धन्य हुआ।

बुद्ध-दर्शन से वे इतने भावविभोर हुए कि उन्होंने भगवान से इस महत्त्वपूर्ण घटना की स्मृति के रूप में किसी पूजनीय पदार्थ की मांग की। भगवान के पास कोई सांसारिक पदार्थ तो था नहीं। अतः उन्होंने अपने सिर पर हाथ फेरा और मसला, जिससे उनके हाथ में कुछ केशधातु आ गये। इन्हें पाकर दोनों व्यापारियों ने धन्यता का अनुभव किया। भगवान को नमस्कार कर इन अनमोल केशधातुओं को लेकर वे प्रसन्नतापूर्वक उक्कला (म्यंमा) लौट गये। जो व्यापारिक सामान वहां से लाये थे, उसे बेचने की जिम्मेदारी अपने साथ आये कर्मचारियों को सौंप दी।

म्यंमा पहुँचने से पूर्व उन्होंने राजा उक्कलापा को इन केशधातुओं को भेंट देने की सूचना भिजवायी, ताकि वह वहां भव्य स्तूप बनाने की योजना बनाये जिसमें इन्हें सम्मानपूर्वक संनिधानित किया जा सके। भगवान बुद्ध के जीवन की यह एक अकेली घटना है जिसमें उन्होंने अपने जीवनकाल में अपने शरीर का कोई अंश किसी उपासक को स्वयं भेंट-स्वरूप दिया हो। इसके बाद अपने जीवन के अंतिम क्षणों में ही उन्होंने अपनी शरीर धातु के बारे में समुचित निर्देश दिये थे।

भगवान की केशधातु लाये जाने की पूर्व-सूचना मिलने पर, देश का राजा नगर के समुद्री तट पर एक हजार सैनिकों के साथ स्वयं इन अवशेषों का स्वागत करने के लिए प्रतीक्षा करने पहुँचा। केशधातु आने पर वहीं तट पर एक स्तूप बनवा कर, उसमें एक पावन केशसादर संनिधानित करने की योजना बनायी। आगे जाकर समुद्र तट पर बने इस स्तूप को **बोटठाऊं**, यानी सहस्र सैनिकों वाला स्तूप, कहा जाने लगा।

तदनंतर राजा ने राजनगर के प्रमुख मध्यवर्ती चौराहे पर नगर के बुजुर्गों की एक सभा संयोजित की, जिसमें इन पावन अवशेषों के संनिधान के लिए राजनगर के **डगोन** नामक टीले का चयन किया गया। नगर में जहां यह सभा हुई वहां **सूले** नाम के **स्तूप** का निर्माण किया गया, जिसमें दो पावन केश संनिधानित किये गये। सूले का अर्थ है – एकत्र होना।

राजनगर के **डगोन** नामक टीले पर **श्वे-डगोन** नामक स्तूप का निर्माण करके उसमें पांच पावन केशसादर संनिधानित किये गये।

म्यंमा धन्य हुआ। सदा के लिए भगवान बुद्ध की पावन शिक्षा का प्रमुख केंद्र बन गया।

इन दोनों बंधुओं ने भगवान बुद्ध से केवल पंचशील लिये थे, जबकि ये खूब समझते थे कि बुद्ध हुआ महापुरुष हमें नितांत भवमुक्ति का मार्ग बता सकता है। अतः म्यंमा में अपना काम-धंधा समेट कर पुनः भारत आये और राजगिर में भगवान से विपश्यना विद्या सीखी। छोटे भाई भल्लिक ने विपश्यना सीख कर अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली और भिक्षु बन गया। बड़ा भाई तपस्सु स्रोतापन्न हुआ और गृहस्थ उपासक बना रहा।

एक मान्यता यह भी है कि इन दोनों ने म्यंमा को भगवान की पावन केशधातु भेंट देकर कुछ शेष बची अपने पास रख ली, जिसे वे अपनी जन्मभूमि में स्तूप बना कर संनिधानित करना चाहते थे। वे अपनी कर्मभूमि और जन्मभूमि दोनों को भगवान की अनमोल भेंट से पावन किया चाहते थे। अब तो उन्हें भगवान से विपश्यना विद्या भी मिल गयी थी। अतः वे दोनों भाई इसे बांटने के लिए भी अपने पुरखों की भूमि **बलख** (बाह्लिक, भल्लिक, Balkh) की ओर चल दिये, जो उत्तरापथ की ओर थी।

प्राचीन पालि ग्रंथों के अनुसार उत्तरापथ में इन दोनों भाइयों के पिता का बड़ा व्यापार चलता था। पुस्कलावती (आज के पेशावर के समीप चारसद्द) उन दिनों के गंधार देश की राजधानी थी। उसके पश्चिमोत्तर की ओर बाह्लिक यानी बलख (भल्लिक) नगर था जो कि उन दिनों बहुत प्रसिद्ध था। इन दोनों भाइयों ने बलख के समीप एक छोटे नगर असितंजन में जन्म लिया था। धनवान कुटुंब में जन्मे थे इसलिए कौटुंबिक गृही भी कहलाते थे। उन्हें अपनी जन्मभूमि के प्रति अतुल प्यार और श्रद्धा होने के कारण दोनों ने असितंजन नगर के प्रमुख द्वार के समीप एक भव्य स्तूप बनवाया और उसमें अपने साथ लायी भगवान की पावन केशधातु को ससम्मान संनिधानित किया।

बलख के इन दोनों बंधुओं द्वारा जिस स्तूप का निर्माण किया गया वह धातुस्तूप बहुत प्रसिद्ध हुआ। ईसा की सातवीं शताब्दी में, यानी इस घटना के लगभग १,२०० वर्ष बाद, प्रसिद्ध चीनी यात्री **ह्वेनसांग** (Yuang Chwang) ने इस स्तूप को देखा था और इसका वर्णन भी किया था। अतः इसकी ऐतिहासिक सच्चाई पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है।

बलख में भिक्षु भल्लिक ने पहला विहार बनवाया। जैसे राजगिर में वेणुवन विहार भगवान बुद्ध का पहला विहार बना, वैसे ही बलख में भल्लिक का पहला विहार बनने पर इस नगर को छोटा राजगिर भी कहा जाने लगा। भल्लिक के पहले विहार के जर्जरित हो जाने पर जो 'नया विहार' बना, उसे **ह्वेनसांग** ने देखा था और इसका वर्णन भी किया था।

तपस्सु और भल्लिक, इन दोनों बंधुओं ने इस प्रदेश में न केवल धातुगर्भ स्तूप का निर्माण किया, बल्कि भगवान से सीखे धर्म का प्रचार भी किया। हम देखते हैं कि आगे जाकर बलख भगवान की शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बन गया। परियत्ति के साथ-साथ पटिपत्ति का भी प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र बना। इतिहास में वहां एक ऐसे स्तूप का वर्णन मिलता है जिसके चारों ओर १५० शून्यागार बने हुए थे। स्पष्ट है यहां के लोग इन दोनों बलख बंधुओं द्वारा लायी गयी विपश्यना साधना का भी अभ्यास करना सीखते थे।

आगे जाकर ना समझ आक्रांताओं ने बलख के सभी स्तूपों को ध्वस्त कर दिया। परंतु इन दोनों बंधुओं ने अपना उत्तरदायित्त्व बखूबी निभाया। धन्य हुए तपस्सु और भल्लिक, जो कि उन दिनों के विशाल भारत के पूर्वी और पश्चिमी दोनों पड़ोसी देशों में भगवान बुद्ध के केशधातु के सर्वप्रथम स्तूपों के निर्माण करने में और उनके पावन धर्मसंदेश को उजागर करने में सहायक बने।

भगवान बुद्ध द्वारा संबोधि प्राप्त किये जाने पर तपस्सु और भल्लिक ही दो ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने गृहस्थों के रूप में भगवान की सर्वप्रथम शरण ग्रहण की थी। इसलिए आगे जाकर भगवान ने जब कुछ प्रमुख भिक्षु-भिक्षुणियों को "अग्र" की उपाधि दी, तब २१ प्रमुख गृहस्थों को भी "अग्र" की उपाधि दी। उस समय इन दोनों भाइयों के लिए भी "अग्र" की उपाधि घोषित की गयी। ये दोनों अपने पूर्वजों के देश में जा बसे थे। अतः तत्कालीन भारत में "अग्र" उपाधिधारी १९ गृहस्थ रह गये थे। इनमें से नंदमाता और नंदपिता दोनों दंपति होने के कारण एक ही कुल के माने गये। आगे जाकर इन १८ कुलों के वंशज व्यापार के सिलसिले में दूर-दूर बस गये। कुछ सदियों बाद इन अग्रपालों के वंशजों के कुलपतियों ने मिलजुल कर अपने-अपने नाम-गोत्र से अग्रोहा में अग्रगणराज्य की स्थापना की। इनमें से जो गणराज्य का गणाधिपति चुना जाता था, वह महाराजा अग्रसेन कहलाता था। शेष अग्रपाल जो दूर बसे थे, उनको इस गणतंत्र की राजधानी में बसने के लिए आह्वान किया गया और प्रोत्साहन दिया गया। अधिकांश अग्रपाल व्यापारी थे। दूर देशों में जाने वाले उनके सार्थों को विभिन्न प्रदेशों के राज्याधिकारी उचित संरक्षण नहीं दे पा रहे थे। अब उनके कारवांओं की रक्षा के लिए अपने अग्रगणराज्य की ओर से ही संरक्षक नियुक्त किये जाने लगे।

महाराजा अग्रसेन और १८ गोत्रीय अग्रवाल समाज के बारे में यह ऐतिहासिक मान्यता तो बहुत कम, परंतु एक अन्य पौराणिक मान्यता अधिक प्रचलित है। इसे ५००० वर्ष पूर्व के काल से जोड़ा जाता है। उसी काल में महाराजा अग्रसेन द्वारा अग्रोहा नगर की स्थापना की गयी मानी जाती है। आज के लगभग सभी अग्रवाल इसी मान्यता को स्वीकार करते हैं। भगवान बुद्ध के जीवनकाल की ऐतिहासिक घटनाओं को व्यक्त करनेवाली मूल बुद्ध वाणी तो अपने यहां से दो सहस्राधिक वर्षों से विलुप्त हो चुकी थी। अब लौटी है। इस पर शोध होना चाहिए। देश के पुरातत्व विभाग की सहायता ली जा सकती है। जो सत्य है उसे स्वीकारने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए।

मंगल मित्र,
स.ना.गो.

इटली में विपश्यना केंद्र का नया स्थान

इटली का एकमात्र विपश्यना केंद्र **'धम्म अटल'** अभी तक पट्टे पर ली गयी भूमि पर चल रहा है। अब इसके लिए 'अपेनाईन' (Apennine)

पर्वतीय क्षेत्र के **'टसके नी'** नामक स्थान में २० हेक्टेयर भूमि खरीदी गयी है। इस नये स्थल पर १९वीं सदी के प्रारंभ का एक पुराना बंगला है। साथ में एक और पुराना मकान है और ये पुराने वृक्षों से भरे सुंदर उद्यान से घिरे हैं। यह शांत, नीरव स्थान अत्यंत मनोहारी है।

इस स्थान पर सड़क, रेल तथा वायुयान द्वारा आसानी से जाया जा सकता है। फोर्ली फ्लोरेंस तथा बोलोना के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे १०० कि.मी. की परिधि में हैं।

ध्यान केंद्र के रूप में उपयोग में लाने के लिए यहां बहुत काम करना होगा। पहले चरण में आंशिक मरम्मत और आंतरिक विभाजनों द्वारा ध्यान-कक्ष व अन्य आवश्यक कक्ष बनेंगे। इस प्रकार लगभग ५० साधकों के लिए शिविर-संचालन संभव हो सकेगा। दूसरे चरण में कुछ और मरम्मत व आचार्य-निवास आदि बनाने होंगे। ऐसा करने पर लगभग ९० साधकों के लिए शिविर लगाना आसान हो जायगा।

अधिक जानकारी के लिए; <info@atala.dhamma.org>
Website: www.atala.dhamma.org/newcenter

अमेरिका के दक्षिण-पूर्व में एक नया केंद्र

दो वर्षों की लंबी खोजबीन के पश्चात सवान्ना से एक घंटे की दूरी पर **जेस्सप**, जार्जिया में ४० एकड़ भूमि प्राप्त हो गयी है। इस प्रकार उत्तरी फ्लोरिडा तथा दक्षिणी जार्जिया के मध्य में दक्षिण-पूर्वी विपश्यना केंद्र **'धम्म पताप'** की स्थापना हो चुकी है। यह स्थल शांत और सुदर्शनीय है।

प्रारंभिक चरण में यहां दो भवनों का निर्माण होगा जिनमें २४ साधकों का शिविर लग सकेगा तथा टेंट्स एवं ट्रेलर की सहायता से केंद्र को चालीस साधकों के उपयोग लायक बनाया जा सकेगा। साथ ही एक ध्यान कक्ष, रसोई घर, भोजनालय, आचार्य निवास तथा कार्यालय के भवन भी बनाने हैं। अतिरिक्त भवनों के नक्शे तैयार हैं और इन्हें बाद के चरणों में बनाया जायगा।

अधिक सूचना के लिए:<www.patapa.dhamma.org>

यूरोप में पहला दीर्घ-शिविर केंद्र

यूरोप के साधकों की प्रबल इच्छा थी कि वे जर्मनी में 'धम्मद्वार' के समीप ही ऐसे दीर्घ शिविर केंद्र की स्थापना करें, परंतु सरकारी नियमानुसार यह संभव नहीं हो सका। संयोग से यू.के. के **'धम्मदीप'** की जमीन अधिक विस्तृत है और उसके समीप, उसी परिसर में वहां के अधिकारियों ने इसके लिए स्वीकृति प्रदान कर दी है। अब शीघ्र ही 'यूरोपियन लांग कोर्स सेंटर'(ELCC) के तत्वावधान में यहां आवश्यक निर्माणकार्य आरंभ होने जा रहा है। यूरोप के सभी केंद्रों के ट्रस्टीज और व्यवस्थापकगण इसके लिए आवश्यक कार्यवाही की कोशिश कर रहे हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क – Visit the ELCC; website: www.eu.region.dhamma.org/os

वियतनाम में पहला विपश्यना शिविर

दक्षिण-पूर्वी एशिया में धर्मप्रचार बहुत तीव्रगति से हुआ परंतु वियतनाम अछूता रह गया था। संयोग से 'गुवेन थुइ' पगोडा क्षेत्र के 'न्हा बे' जिले में गत मई में क्रमशः दो शिविरों का संचालन हुआ, जिससे ८१ लोगों को धर्मलाभ प्राप्त हुआ। वियतनामी भाषा में पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों और निर्देशों का अनुवाद विपयतनामी साधकों द्वारा पहले ही किया जा चुका था।

इस प्रकार हो रहे विश्वव्यापी धर्मप्रसार से बहुजन मंगल हो! जन-जन का मंगल हो!

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टी.वी. पर **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियों को विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

पूज्य गुरुजी का प्रवचन 'हंगामा' टी.वी. चैनल पर

प्रतिदिन प्रातः ४:३० से ६ बजे तक पूरा प्रवचन एक साथ प्रसारित किया जा रहा है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित इसका लाभ उठा सकते हैं।

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे है।

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर

पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २००७-२००८ के लिए विज्ञप्ति

एक महीने का सघन पालि-हिंदी प्रारंभिक पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००५ में प्रारंभ हुआ था। इस वर्ष इसका तीसरा सत्र है। यह सत्र **४ दिसंबर २००७ (सुबह) से १ जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना किसी अवकाश के चलेगा।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – वे साधक जिन्होंने (१) पांच दस दिवसीय विपश्यना शिविर, तथा (२) एक सतिपट्ठान शिविर, किये हों (३) पंचशील का पालन करते हुए, (४) दो वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों एवं (५) विद्या के प्रति समर्पित हों। बीस दिवसीय शिविर किये हुए साधक को वरीयता दी जायगी।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

एक महीने का सघन पालि-हिंदी उच्च पाठ्यक्रम

यह पाठ्यक्रम वर्ष २००६ में पहली बार प्रारंभ किया गया था। इस वर्ष इसका द्वितीय सत्र है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **२ जनवरी २००८ (सुबह) से ३० जनवरी २००८ (सुबह)** तक बिना अवकाश के चलेगा

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि १५ अक्तूबर २००७** है।

प्रवेश योग्यताएं –

ए) योग्यताएं – -- इस पाठ्यक्रम के लिए उपरोक्त योग्यताओं के साथ व्ही. आर. आई. द्वारा आयोजित एक महीने का सघन पालि-हिंदी **प्रारंभिक पाठ्यक्रम** पूरा किया होना अनिवार्य है। उन विपश्यी साधकों को जिनके पास उपरोक्त योग्यताएं हैं तथा जिन्हें पालि का प्रारंभिक ज्ञान है, उन्हें वरीयता दी जायगी ।

-- इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

बी) शैक्षणिक योग्यता – -- १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए। स्नातक को वरीयता दी जायगी।

-- पाठ्यक्रम के लिए लगभग चौबीस (१२ पुरुष एवं १२ महिला) विद्यार्थियों का पंजीकरण किया जायगा।

इनके लिए आवेदन-पत्र कृपया **विपश्यना विशोधन विन्यास,** धम्मगिरि, इगतपुरी से प्राप्त कर सकते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

ग्लोबल पगोडा के भीतर एक दिवसीय शिविर

हर महीने के **तीसरे रविवार** को ग्लोबल पगोडा के **भीतर** एक दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ करेगा। साधक भगवान बुद्ध की **पावन धातुओं** तथा **पू. गुरुदेव के** सान्निध्य में तपने के सुयोग का लाभ ले सकेंगे। शेष रविवारों के कार्यक्रम पूर्ववत होंगे। शिविर सुबह ११ बजे से सायं ५ बजे तक रहेगा। पगोडा साइट तक पहुँचने व अन्य जानकारी के लिए निम्न पते पर संपर्क करें –

संपर्कः श्री डेरेक पेगाडो, फोनः (०२२) २८४५-१२०६/१२०४/२१११/२२६१;
टेलि-फैक्सः २८४५-२१११.
Email: globalpagoda@hotmail.com;
Website: www.globalpagoda.org

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती सुलोचना अग्रवाल, नाशिक
२-३. श्री अशोक एवं श्रीमती पुष्पा पवार, नाशिक
4. Mr. Robert Cannon, USA
5. Ms. Leslie Jennings, USA

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री सत्यपाल शर्मा, जयपुर
२. श्रीमान अली वोसोघ ग्रायेली, ईरान
3. Mr. Suk Jin Choi, Korea
4-5. Mr. Sin-Fatt Yeo & Mrs. Peck-Hia Khow, Malaysia
6. Mrs. Pornphen Leenutapong, Thailand
7. Mrs. Patra Patrabutra, Thailand
8-9. Mr. Samarn & Mrs. Sermsong Sirisaeng, Thailand
10. Mr. Piers Ruston Messum, UK
11. Ms. Hema Shivji, UK

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री अनुज कुमार, नई दिल्ली
२. श्री अनुराग मित्तल, उत्तर प्रदेश
३. श्रीमती मृदुल, उत्तरांचल
४. डॉ. (श्रीमती) नीना लखानी, नई दिल्ली
५. श्रीमती चंद्रकांता लॉ, पुणे
६. श्रीमती राज मोहिनी, हरियाणा
7. Mr. Eric Garcia, Spain
8. Ms. Hsu, Wan-Lin, Taiwan

दोहे धर्म के

परम सत्य पर भ्रांति के, परदे पड़े अनेक।
जो चाहे परदे हटें, विपश्यना से देख॥

झूठी कूड़ी कल्पना, सदा सत्य से दूर।
सत्य दिखाय विपश्यना, मंगल से भरपूर॥

सम्यक दर्शन ज्ञान का, ऐसा सुखद प्रभाव।
देखत देखत सब रुकें, राग द्वेष के स्राव॥

अपने भीतर जो करे, सही सत्य का शोध।
दूर होय अज्ञान सब, जगे मुक्ति का बोध॥

शीलवान अंतर्मुखी, सतत सजग बन जाय।
क्षण क्षण काया चित्त का, सत्य निरखता जाय॥

विपश्यना औषधि मिले, कटें राग के रोग।
भव भव के बन्धन कटें, होय धरम संजोग॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

धरती पर बहती रवै, सुद्ध धरम री धार।
जन जन रो होवै भलो, जन जन रो उद्धार॥

सुद्ध धरम फिर जगत मँह, पूज्य प्रतिस्ठित होय।
जन जन रो होवै भलो, जन जन मंगळ होय॥

जो जो द्वेसी धरम रा, द्वेस मुक्त हो ज्याय।
सुद्ध धरम प्रेमी बणै, दुक्ख दूर हो ज्याय॥

क्रोधी त्यागै क्रोध नै, द्रोही त्यागै द्रोह।
जन-मन मँह प्रग्या जगै, दूर हुवै सम्मोह॥

जीवन भरज्या धरम स्यूं, निरमळ अर निस्पाप।
मन मैलो होवै नहीं, रवै न दुख संताप॥

निरबळ सब निरभय हुवै, सबळ न ह्वै उद्दंड।
जन जन रै मन प्यार री, गंगा बवै अखंड॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोनः (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्सः (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५१, श्रावण पूर्णिमा, २८ अगस्त, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं.** १९१५६/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org